सामाजिक विघटन बनाम सामाजिक सामंजस्य
(स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ0 पवन कुमार तिवारी

आधुनिक नारी की सर्वप्रथम एवं सर्वप्रमुख समस्या है : आत्म की दूसरों के द्वारा पहचान और महत्व प्राप्ति। यह स्त्री आत्म नैतिकता की कसौटी पर स्वयं को तो परखती ही है साथ ही यह इच्छा भी रखती है कि दूसरे लोग महसूस करें की उसके अस्तित्व की भी महत्ता है। इस ओर उसका अहम निरन्तर सचेष्ट है। अतः उसका संघर्ष, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक अंकुशों के विरूद्ध होता है। इनमें व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा और निजी हित में बाधक सामाजिक परम्पराओं, रूढियों, मर्यादा–संयम, परम नियमों का प्रत्यक्ष विरोध है। यह विद्रोह न केवल सामाजिक मूल्यों के प्रति व्यक्त किया गया वरन उन सभी संस्थानों और मूल्यों के प्रति भी व्यक्त हुआ है जो मानवहित एवं जनवादी सत्वर्यों की उपेक्षा करते है। मैत्रेयी पुष्पा जैसी विदुशी लेखिका ने एक विमर्ष लेख में इस सच को उजागर करते हुये लिखा है कि ''मैं पलकें उठाकर देखती हूँ : वास्तव में ही यह एक खौफनाक सच को उजागर करता हुआ समय है। यदि नहीं होता तो बार बार मरती हुयी चेतना और सहती सहमती हुयी अस्मिता के खिलाफ उठी चली आती 'फैसला की वासुमती 'सामाजिक विषमताओं और आर्थिक शोषक वर्ग को चुनौती देती इदन्नमम की मन्दा? और उसी से कदम मिलाती हुयी जातिगत तथा राजनीतिक दलालों से सिंहासन छीनने का इरादा किया है 'चाक की सारंग नैनी' ने। ये आधी दुनिया के बाशिन्दे सम्यक दृष्टि और नैतिक आजादी में दावेदारी करने लगें है कि प्रजातंत्र को लोकतंत्र के रूप में देखना सीख गये हैं।''